मध्यकाल में अकाल

डॉ. मुकुन्द शरण त्रिपाठी

मध्यकालीन फारसी साहित्य में सबसे पहले खिल्जी काल में अकाल के व्यापक प्रभाव का उल्लेख मिलता है। बर्नी इस घटना का उल्लेख अपनी पुस्तक 'तारीख–ए–फिरोजशाही' में करते हुए लिखते हैं कि "जलालुद्दीन फिरोज खिल्जी के समय में अनावृष्टि के कारण दिल्ली एवं शिवालिक के प्रदेशों में सूखा पड़ गया। राजधानी अकालग्रस्त हो गयी। शिवालिक प्रदेशों में एक बूँद पानी भी नहीं बरसा। दिल्ली में अनाज की कीमतें अत्यधिक बढ़ गयी। अनाज का मूल्य एक जीतल प्रति सेर पहुँच गया। शिवालिक प्रदेश के लोग अपने परिवारों सहित दिल्ली आ गये। यद्यपि सुल्तान तथा अमीर लोग दिल्ली आये हुए लोगों को जो दरिद्रता की श्रेणी में पहुँच गये थे, उनकी क्षुधापूर्ति हेतु भिक्षा प्रदान करते रहें फिर भी समस्या का स्थायी निदान न हो सका। लोग 20–20 तथा 30–30 के झुण्ड में एकत्रित होकर भूख के मारे यमुना नदी में डूबकर आत्महत्या करने लगे। यद्यपि धनी लोगों के दान से क्षुधाड़ितों को कुछ राहत जरूर मिली, किन्तु लम्बे समय तक इनके लिये सम्यक् व्यवस्था नहीं हो पायी। दूसरे वर्ष इतनी वर्षा हुई कि किसी को इस तरह की वर्षा याद न रही।" यद्यपि बर्नी इस घटना का कारण एक दरवेश सिद्दी मौला की हत्या से जोड़ता है, तथापि ऐसे भयंकर अकाल के समय शासन द्वारा जो उचित आपदा–प्रबंधन करना चाहिए वह नहीं हो पाया। जो सहायता भूखे लोगों को मिली उसके पीछे धार्मिक उद्देश्य ज्यादा था प्रशासनिक सहयोग कम।